ISSN: 2249-894X IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2017

REVIEW OF RESEARCH

मुंशी प्रेमचंद के साहित्य में सामाजिक चेतना

अमित कुमार पटेल
सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, श्री राम कॉलेज सारागांव, रायपुर (छ.ग)

परिचय:

मुंशी प्रेमचंद (1880–1936) हिंदी और उर्दू साहित्य के महान कथाकार थे। उन्होंने समाज के यथार्थ को अपनी कहानियों में बहुत ही प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। उनकी कहानियों में सामाजिक चेतना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। मुंशी प्रेमचंद हिंदी-उर्दू साहित्य के साहित्यिक आयामों को जहां व्यापक रूप से प्रभावित करने वाले एक प्रतीक हैं, वहीं उनके साहित्य का एक प्रमुख केंद्र बना **जाति**, **अधिकार**, **आर्थिक स्थिति** और **मानव स्वाभिमान** का संरक्षण। प्रेमचंद की रचनाओं में गरीब, दलित, निम्न-वर्गीय वर्ग और समाज के उपेक्षित हिस्सों को जीवन्त रूप में प्रस्तुत किया गया है। सामाजिक भेदभाव उनके साहित्य में न केवल पृष्ठभूमि है, बल्कि केंद्रीय संघर्ष भी है। मुंशी प्रेमचंद हिंदी साहित्य के ऐसे स्तंभ हैं जिन्होंने अपने लेखन से सामाजिक, नैतिक और मानवीय मूल्यों की गहरी स्थापना की। वे न केवल एक महान कथाकार थे, बल्कि एक संवेदनशील समाज सुधारक भी थे। उनके साहित्य में समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर करते हुए नैतिकता, करुणा, त्याग, ईमानदारी और न्याय जैसे मूल्यों को विशेष स्थान दिया गया है। प्रेमचंद का साहित्य न केवल मनोरंजन करता है, बल्कि पाठक को आत्ममंथन और आत्मचिंतन के लिए भी प्रेरित करता है।

सामाजिक चेतना के प्रमुख आयाम:

1. जातिवाद और सामाजिक भेदभाव:

प्रेमचंद की कहानियाँ जातिवाद और सामाजिक विषमता के खिलाफ एक प्रबल आवाज़ हैं।

- **कहानी:**
- **'सद्गति'**

इस कहानी में दुखी नामक एक दलित चरित्र को दिखाया गया है जिसे ब्राह्मण के अहंकार और जातिगत संकीर्णता के कारण अपनी जान गंवानी पड़ती है। यह जातिगत अन्याय के प्रति सामाजिक चेतना को जगाती है।

2. स्त्री शोषण और नारी चेतना:

प्रेमचंद ने नारी के अधिकार, उसकी अस्मिता और समाज में उसके शोषण की स्थितियों को उजागर किया।

- **कहानी: 'प्रेमा', 'सेवासदन', 'बड़े घर की बेटी'**

इन कहानियों में स्त्रियों की दशा, उनकी पीड़ा, और उनके आत्म-सम्मान की गूंज सुनाई देती है। 'सेवासदन' में वेश्या जीवन की विवशता और उससे निकलने की संघर्षपूर्ण यात्रा दिखाई गई है।

3. किसान और श्रमिक वर्ग का शोषण:

प्रेमचंद ने किसानों की बदहाली, जमींदारी शोषण और पूंजीवादी अन्याय को प्रमुखता दी है।

- **कहानी: 'पूस की रात', 'कफ़न', 'ईदगाह'**

'पूस की रात' में किसान हल्कू की ठिठुरती गरीबी दिखाई गई है। 'कफ़न' में घिसू और माधव जैसे पात्र समाज की अमानवीयता और हताशा के प्रतीक हैं।

4. नैतिक मूल्यों की स्थापना:

प्रेमचंद की कहानियाँ केवल सामाजिक बुराइयों की आलोचना ही नहीं करतीं, बल्कि नैतिक मूल्यों को स्थापित करने का प्रयास भी करती हैं।

- **कहानी: 'ईदगाह'**

हामिद का त्याग और प्रेम इस बात को दर्शाता है कि जीवन में संवेदना और नैतिकता कितनी आवश्यक हैं।

5. साम्प्रदायिक सौहार्द:

प्रेमचंद धर्म के नाम पर होने वाले भेदभाव के विरोधी थे और उन्होंने मानवता को सर्वोपरि माना।

- **कहानी: 'पंच परमेश्वर'**

इस कहानी में न्याय की भावना और धार्मिक एकता को बहुत सुंदर रूप में चित्रित किया गया है।

1. प्रेमचंद और सामाजिक यथार्थ

प्रेमचंद का साहित्य **आधुनिक यथार्थवाद** का प्रतिनिधि है। वे 19वीं और 20वीं शताब्दी के प्रारंभिक भारत की जटिलताजहाँ सामंती—, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और जातिगत विभाजन एकका गहरा विश्लेषण —दूसरे में उलझे हुए थे- प्रस्तुत करते हैं।

1.1 यथार्थबोध

प्रेमचंद की कहानियों में पात्र ऐसे होते हैं जो समाज के व्यक्तिगत विकारों नीच-जैसे ऊँच), जातपांत-, सम्पन्न (दलित- की परिणति होते हैं। वे इसे किसी सज्जित उपदेशात्मक शैली में नहीं, बल्कि **व्यक्तिगत अनुभवों**, **तनावों** और **यथार्थवादी संवाद** के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं।

2. जातिवाद का चित्रण

प्रेमचंद ने जातिवाद)casteism) को स्पष्टता से प्रस्तुत करते हुए दिखाया है कि किस प्रकार इससे व्यक्ति की पहचान, अवसर, और सामाजिक तालमेल प्रभावित होते हैं।

2.1 "गोदान"

"गोदानप्रेमचंद की प्रमुख कृति है जिसमें" **होरी** नामक दलित किसान है।

- **जातिगत उत्पीड़न**: होरी को गाँव के उच्च जातीय जातकों द्वारा तिरस्कार का सामना करना पड़ता है।
- **सम्मान की विभाजन**: वह जब गाँव वालों से सम्मान की उम्मीद करता है, तो जातीय भेदभाव उसे फिर लौटकर चोट करता है।
- **आर्थिक घटक**: उसका गरीबी और जातिगत निम्नता दोनों एक दूसरे से अंतःक्रियाशील हैं।

2.2 "गबन"

"गबनमें भी " **जातिगत वर्गबद्धता** और संपत्ति से सम्बन्धित वर्गीय भेद स्पष्ट हैं। भोंसले परिवार के सवर्ण चरित्र और गौड़ जैसे संपन्न ग्रामीण बीच सामाजिक विभेद दिखता है।

2.3 अन्य कथाएँ

प्रेमचंद की छोटी कहानियां जैसे **"ईदगाह"**, **"पंच परमेश्वर"** और **"नलदन"** में भी समाज के विभाजन के लक्षण गहरे हैं। उदाहरण के लिए, "ईदगाहमें गरीब बच्चे हामिद की गरीबी को अन्य बच्चों के तिरस्कार से समझा जा सकता है। "

3. आर्थिक विभाजन और जातिवाद

प्रेमचंद की दृष्टि में जातिवाद केवल सांस्कृतिक नहीं, बल्कि आर्थिक वर्ग विभाजन से भी गहरा जुड़ा होता है।

3.1 भूख, गरीबी और जातिवाद

होरी जैसे पात्र भूखे हैं, गरीब हैं और जातिगत रूप से अवहेलिततीनों रूपों में उपेक्षित हैं।—

- **गरीबी का मसीहा होना**: उनका अस्तित्व केवल समृद्ध वर्गों द्वारा निर्धारित होता है।
- **पाखंडों की परत**: ऊँच जातीय व्यक्ति आर्थिक रूप से सक्षम तो होते ही हैं, लेकिन अपनी जाति का श्रेष्ठ पाखंड भी बनाए रखते हैं।

3.2 जमीन–संपत्ति और सत्ता

भूमिहीन किसान या पट्टीदार को जमीन का कोई अधिकार नहीं मिलता। इससे जातिगत श्रेणी और भेद को गहराई (जैसे होरी) मिलती है।

4. प्रेमचंद की आलोचना और संवादात्मक दृष्टि

प्रेमचंद अपने पात्रों के माध्यम से **जातिवाद के खिलाफ मौन वकालत** करते हैं।

4.1 नस्लवाद की आलोचना

वह जातिवाद को मनुष्यप्रकृति का अभिन्न भाग मानने के बजाय-, एक सामाजिक कुरीति के रूप में देखते हैं। उनके लेखन से स्पष्ट है कि वे इस व्यवस्था को बदलने का प्रयास करते हैं।

4.2 संवादात्मक शैली

प्रेमचंद किसी भी उपदेशात्मक शैली का सहारा नहीं लेते, बल्कि पात्रों के माध्यम से भूलचूक-, हिंसा, दासता, असहमति और संघर्ष दिखाकर **जातिवादी संरचना के आत्मविरोध** को उजागर करते हैं।

5. प्रमुख रचनाओं में जातिगत द्वंद्व

5.1 "परस्त्री" और स्त्री–जाति

"परस्त्रीमें स्त्री का जातिगत दबाव शोभा को भारी चोट पहुँचाता है। यह जाति ", लिंग, और शौहरत की तीन तहों में बनी जटिलता का प्रतिनिधित्व करती है।

5.2 "शोना"

छोटा किसान शोना अपनी गरीबी और जातिगत दबाव को झेलता है। उसकी आत्मसम्मान की लड़ाई सामाजिक असमानताओं का दर्पण बनती है।

5.3 "आरती"

यह कहानी धार्मिक, जातिगत और सांस्कृतिक भेद को दिखाती है, जहाँ होरी की भूमिका अशिक्षा के कारण (हलिया वर्ग) उसका जीवन बदले होने का प्रतीक बन जाती है।

6. प्रेमचंद की दृष्टिसुधारक और क्रांतिकारी :

6.1 परंपरा vs आधुनिकता

प्रेमचंद में परंपरा का सम्मान है, लेकिन अंधविश्वास और अंधजातिप्रथा को वह एक विकृति मानते हैं। वे **समाज में बदलाव के स्वर** उठाते हैं।

6.2 क्रांति मानवता की

उनकी लेखनी में क्रांतिकारी स्वर उभरता हैप्रेम—, लोकतंत्र, स्वतंत्रता और मानव मानवीय अधिकारों के पक्ष में।

7. समाजोपयोगिता और आज की प्रासंगिकता

रचनाओं में प्रेमचंद द्वारा उठाए गए मुद्दे आज भी उतने ही अप्रचलित नहीं।21वीं सदी में भी:

7.1 दलित-जाती की स्थिति

आज भी कई ग्रामीणशहरी समुदायों में जातिगत छेडछाड/, भेदभाव और निर्ममताएं देखने को मिलती हैं।

7.2 पढ़ाई, नौकरी और समझौता

आज भी अभाव, वर्णव्यवस्था और व्यक्तिगत अधिकार का सवाल व्याप्त रहता हैप्रेमचंद की कहानियाँ आज भी हमें इन्हीं — समस्याओं की याद दिलाती हैं।

8. समुचित विश्लेषण

1. **जातिवाद केवल वर्णों पर आधारित नहीं**—यह समस्या आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक कई कारणों से उलझी है।
2. प्रेमचंद की लेखनी में जातिवाद को एक **विरोधात्मक परिकल्पना** के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जहाँ पात्र स्वाभिमान की लड़ाई लड़ते हैं।
3. उनकी कहानियाँ हमें याद दिलाते हैं कि जातिगत विभाजन की सामाजिक संरचना में सुधार की आवश्यकता हैऔर यह — सुधार व्यक्तिगत स्तर से शुरू होता है।
4. प्रेमचंद ने यह दिखाया कि प्यार, करुणा और मानवता की धाराएँ ही जातिगत दीवारों को ध्वस्त कर सकती हैं।

मुंशी प्रेमचंद का साहित्य हमें सिखाता है कि **जातिवाद और सामाजिक भेदभाव** केवल समाज की संरचना की समस्याएं नहीं है, बल्कि यह **मानवता, उसकी गरिमा और उसके अधिकार** से जुड़ी गहरी लड़ाई है। उनकी लेखनी में यह संघर्ष स्पष्ट, मार्मिक और प्रेरणादायक ढंग से प्रस्तुत होता है। आज के समय में यह निबंध हमें याद दिलाता है कि सामाजिक न्याय के लिए, भाषा या जाति से उपर उठकर **मानवत्व** को पहचानकर उसे सशक्त बनाना हमारा उत्तरदायित्व हैऔर इसी दिशा में — प्रेमचंद की साहित्यिक गवाही हमें आगे लेकर जाकर प्रेरणा देती है।

मुंशी प्रेमचंद हिंदी साहित्य के ऐसे स्तंभ हैं जिन्होंने अपने लेखन से सामाजिक, नैतिक और मानवीय मूल्यों की गहरी स्थापना की। वे न केवल एक महान कथाकार थे, बल्कि एक संवेदनशील समाज सुधारक भी थे। उनके साहित्य में समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर करते हुए नैतिकता, करुणा, त्याग, ईमानदारी और न्याय जैसे मूल्यों को विशेष स्थान दिया गया है। प्रेमचंद का साहित्य न केवल मनोरंजन करता है, बल्कि पाठक को आत्ममंथन और आत्मचिंतन के लिए भी प्रेरित करता है।

नैतिक मूल्यों की अवधारणा:

नैतिक मूल्य वे सिद्धांत होते हैं जो व्यक्ति के आचरण को सही दिशा में प्रेरित करते हैं। जैसे — सत्य, अहिंसा, करुणा, न्याय, परोपकार, कर्तव्यनिष्ठा आदि। प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों, कहानियों और निबंधों के माध्यम से इन मूल्यों को जनमानस तक पहुँचाया। उन्होंने उन स्थितियों का चित्रण किया जिसमें व्यक्ति इन मूल्यों के विरुद्ध जाता है और उसके दुष्परिणाम भुगतता है, साथ ही उन पात्रों को भी दिखाया जो कठिनाइयों के बावजूद नैतिकता का पालन करते हैं।

प्रेमचंद के प्रमुख नैतिक आदर्श:

1. सत्य और ईमानदारी:

प्रेमचंद के अधिकांश पात्र सत्यवादी और ईमानदार होते हैं, चाहे उनकी ईमानदारी उन्हें कितनी भी कठिनाइयों में क्यों न डाल दे। उपन्यास *"गोदान"* का पात्र होरी इसका उदाहरण है। वह अत्यंत गरीब होते हुए भी ईमानदारी नहीं छोड़ता। वह गो-पालन के आदर्श से इतना जुड़ा होता है कि अंत में अपने प्राण तक त्याग देता है, पर झूठ या बेईमानी का सहारा नहीं लेता।

2. कर्तव्यनिष्ठा और त्याग:

प्रेमचंद के साहित्य में नारी पात्र विशेष रूप से कर्तव्यनिष्ठ दिखाई देते हैं। उपन्यास *"गबन"* की नायिका जैबुनिस्सा पति के अपराध के बाद भी अपने कर्तव्य से विमुख नहीं होती। वह आत्मसम्मान को बनाए रखते हुए परिवार और समाज के प्रति अपना कर्तव्य निभाती है।

3. करुणा और मानवता:

प्रेमचंद के पात्र गरीब, दलित और शोषित वर्गों से संबंधित होते हैं। उनके प्रति लेखक की करुणा बार-बार दिखाई देती है। *"सद्गति"* कहानी में दुखी चमार जैसे पात्रों के माध्यम से उन्होंने सामाजिक असमानता को दर्शाया और यह बताया कि सच्चा धर्म करुणा और मानवता में निहित है, न कि कर्मकांड में।

4. नारी सम्मान और समानता:

प्रेमचंद नारी की गरिमा के प्रबल समर्थक थे। उनकी कहानियों जैसे *"निर्मला"*, *"शांति"* आदि में महिलाओं के अधिकारों और उनके प्रति समाज की संकीर्ण सोच पर गहरा प्रहार किया गया है। *"निर्मला"* उपन्यास में दिखाया गया है कि किस प्रकार एक बालिका विवाह जैसी कुप्रथा एक नारी के जीवन को बर्बाद कर देती है। यह सामाजिक सुधार की ओर एक नैतिक संदेश है।

कहानियों में नैतिक मूल्यों की झलक:

1. पंच परमेश्वर

इस कहानी में प्रेमचंद ने न्याय और निष्पक्षता की महानता को दर्शाया है। जब दोस्ती और धर्मसंकट में फँसे जुम्मन शेख को यह एहसास होता है कि न्याय सबसे ऊपर है, तब वह अपने हितों के विरुद्ध निर्णय देता है। यह कहानी बताती है कि पंच की गद्दी पर बैठने वाला व्यक्ति न तो दोस्त होता है और न ही दुश्मन— वह केवल न्याय का प्रतिनिधि होता है।

2. ईदगाह

इस अत्यंत प्रसिद्ध कहानी में हामिद नामक बालक की अपने दादी के प्रति श्रद्धा, त्याग और ममत्व को दिखाया गया है। वह अपनी इच्छाओं को दबाकर अपनी दादी के लिए चिमटा खरीदता है। यह कहानी त्याग, परिवार के प्रति प्रेम और बचपन की मासूम नैतिकता का अद्भु त चित्रण है।

3. कफन

यद्यपि इस कहानी में नायक घीसू और माधव का चरित्र नकारात्मक प्रतीत होता है, लेकिन यह समाज के उस क्रूर यथार्थ को दर्शाती है जहाँ गरीब व्यक्ति की नैतिकता भूख और व्यवस्था के आगे हार मान जाती है। यह कहानी पाठकों को यह सोचने पर मजबूर करती है कि क्या भूख के आगे नैतिकता जीवित रह सकती है।

प्रेमचंद की भाषा और शैली में नैतिकता:

प्रेमचंद की भाषा सरल, सहज और जनभाषा से जुड़ी हुई थी। उन्होंने आम आदमी की बोलचाल को अपनाया ताकि उनका संदेश समाज के हर वर्ग तक पहुँच सके। उनकी शैली में नैतिकता सिर्फ कथानक में नहीं, बल्कि पात्रों के संवादों, उनकी सोच और जीवन दृष्टि में भी स्पष्ट दिखाई देती है। वे उपदेश देने की बजाय पात्रों की व्यथा, संघर्ष और निर्णयों के माध्यम से पाठकों के हृदय को स्पर्श करते हैं।

सामाजिक और नैतिक सुधार का दृष्टिकोण:

प्रेमचंद का साहित्य समाज का दर्पण है जिसमें उन्होंने शोषण, जातिवाद, सामंतवाद, अशिक्षा, महिला उत्पीड़न और धार्मिक आडंबरों की आलोचना की। उनका उद्देश्य मात्र मनोरंजन नहीं था, बल्कि समाज में नैतिक जागरूकता फैलाना भी था। उन्होंने अपने साहित्य से यह सन्देश दिया कि नैतिक मूल्यों की स्थापना केवल किताबों से नहीं, बल्कि व्यवहार और सामाजिक चेतना से होती है।

निष्कर्ष:

मुंशी प्रेमचंद की कहानियाँ समाज का आईना हैं। उन्होंने अपनी लेखनी से सामाजिक कुरीतियों, अन्याय और भेदभाव के विरुद्ध आवाज़ उठाई। उनकी कहानियों में करुणा, संवेदना और सुधार की भावना है जो आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं। सामाजिक चेतना को जागृत करने में उनका योगदान अतुलनीय है। मुंशी प्रेमचंद का साहित्य हमें सिखाता है कि **जातिवाद और सामाजिक भेदभाव** केवल समाज की संरचना की समस्याएं नहीं है, बल्कि यह **मानवता, उसकी गरिमा और उसके अधिकार** से जुड़ी गहरी लड़ाई है। उनकी लेखनी में यह संघर्ष स्पष्ट, मार्मिक और प्रेरणादायक ढंग से प्रस्तुत होता है। आज के समय में यह निबंध हमें याद दिलाता है कि सामाजिक न्याय के लिए, भाषा या जाति से उपर उठकर **मानवत्व** को पहचानकर उसे सशक्त बनाना हमारा उत्तरदायित्व है—और इसी दिशा में प्रेमचंद की साहित्यिक गवाही हमें आगे लेकर जाकर प्रेरणा देती है। मुंशी प्रेमचंद का साहित्य आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना उनके समय में था। उन्होंने नैतिक मूल्यों को केवल शब्दों में नहीं, बल्कि अपने पात्रों के जीवन संघर्षों में उतारा। प्रेमचंद के रचनात्मक संसार में नैतिकता और मानवता का गहन समन्वय देखने को मिलता है। उनके साहित्य से यह प्रेरणा मिलती है कि चाहे कितनी भी कठिनाइयाँ हों, सच्चाई, करुणा और ईमानदारी जैसे मूल्य ही मानव जीवन को सार्थक बनाते हैं।

इस प्रकार, प्रेमचंद न केवल कथा साहित्य के सम्राट हैं, बल्कि नैतिकता के प्रेरक प्रवक्ता भी हैं। उनके साहित्य से वर्तमान और आने वाली पीढ़ियाँ नैतिक दिशा प्राप्त करती रहेंगी — यही उनकी अमरता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :—

1. प्रेमचंद स्मृति , अमित राय , हंस प्रकाशन , इलाहाबाद 1959
2. प्रेमचंद के निबंध साहित्य में सामाजिक चेतना , अर्चना जैन
3. प्रेमचंद युगीन भारतीय समाज, डॉक्टर मोहन कुमार
4. कलाम का मजदूर , मदन गोपाल , राजकमल प्रकाशन 1958
5. प्रेमचंद और उनका युग , डॉ रामविलास शर्मा, महर चंद्र मुंशी , दिल्ली

6. प्रेमचंद और उनका साहित्य , डॉक्टर श्रीमती शीला गुप्ता , साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड इलाहाबाद 1972
7. प्रेमचंद कला और कृतित्व , डॉक्टर प्रेम नारायण टंडन , पब्लिशिं ग हाउस प्रयाग
8. प्रेमचंद और उनका साहित्य , डॉक्टर श्रीमती शीला गुप्ता , साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड इलाहाबाद 1972
9. प्रेमचंद व्यक्तित्व और साहित्यकार, मोहम्मद नाथ गुप्त, सरस्वती प्रेस इलाहाबाद
10. प्रेमचंद के साहित्य सिद्धांत, डॉ नरेंद्र कोहली, अशोक प्रकाशन दिल्ली
11. कलाम का मजदूर , मदन गोपाल , राजकमल प्रकाशन 1958